साहित्य अकादेमी

साहित्योत्सव का आरंभ : अकादेमी प्रदर्शनी का उद्घाटन

नई दिल्ली 15 फ़रवरी 2016। साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले साहित्योत्सव की शुरुआत आज अकादेमी प्रदर्शनी के उद्घाटन से हुई। प्रदर्शनी में अकादेमी की 2015 की गतिविधियों की चित्रमय प्रस्तुति के साथ–साथ पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया है। प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया लेखक मनोज दास द्वारा किया गया। रवीन्द्र भवन लॉन में आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी लेखकों का स्वाभिमान है और लेखकों ने इसके मान की हमेशा रक्षा की है। उन्होने अकादेमी द्वारा गैर मान्यता प्राप्त भाषाओं में किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा इस बात पर जोर दिया कि उन भाषाओं में लिखा जा रहा श्रेष्ठ साहित्य दूसरी भाषाओं के पाठक समुदाय तक पहुँचाए जाने कि ज़रूरत है। उन्होंने अकादेमी से अपने 55 वर्ष लंबे संबंधों का जिक्र किया तथा 1957 का अकादेमी और उसके अध्यक्ष पंडित जवाहर लाल नेहरू से जुड़ा हुआ एक रोचक संस्मरण सुनाया और क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य के विकास में अकादेमी की भूमिका को रेखांकित किया।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य अकादेमी 24 भारतीय भाषाओं में प्रकाशन और पुरस्कार का जो विस्तृत कार्य कर रही है उसकी जानकारी ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुँचे यही इस साहित्योत्सव का उद्देश्य है। उन्होंने देश भर में अकादेमी द्वारा व्यापक पैमाने पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों और पुस्तक प्रकाशन योजना के सफलता के लिए अकादेमी के अधिकारियों कर्मचारियों को बधाई दी तथा अकादेमी को प्राप्त साहित्य संसार के सहयोग एवं समर्थन के लिए लेखकों के प्रति आभार प्रकट किया। इससे पहले अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की 2015 की उपलब्धियों के बारे में बताया। उन्होंने जानकारी दी कि साहित्य अकादेमी ने पिछले साल 479 कार्यक्रम आयोजित किए तथा 189 पुस्तक प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया। अकादेमी के इम्फाल और नई दिल्ली में जनजातीय एवं वाचिक साहित्य केन्द्रों की भी शुरुआत की गई। इस वर्ष अकादेमी ने 426 पुस्तकों का प्रकाशन किया है तथा 117 पुरस्कार प्रदान किए हैं। इसके अलावा 9 विद्वानों को भाषा सम्मान तथा प्रख्यात लेखकों एस. एल. भैरप्पा एवं सी. नारायण रेड्डी को महत्तर सदस्यता और चीन के हिन्दी विद्वान जियाङ दिङहान को प्रदान किया गया। उन्होने बताया कि अकादेमी द्वारा कश्मीरी गेट एवं विश्वविद्यालय मेट्रो स्टेशनों पर पुस्तक बिक्री केन्द्र खोले गए हैं। हर 18 घंटे में एक कार्यक्रम और हर 20 घंटे में एक किताब का प्रकाशन किया है। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि इस वर्ष साहित्योत्सव में आदिवासी एवं वाचिक साहित्य एवं पूर्वोत्तर पर विशेष फोकस किया जा रहा है।

दोपहर में आदिवासी काव्य भाषा का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन प्रख्यात विद्वान एवं शिक्षाविद् मृणाल मिरी ने किया। और इसमें बंजारा, भीली, चकमा, सौरा, हल्बी, हो, खासी, काकबरोक, गोंडी आदि 15 आदिवासी भाषाओं के कवियों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। शाम 6 बजे विंझल जनजाति के पारंपरिक नृत्य कर्मा की प्रस्तुति पद्मपुर संगीत समिति, ओड़िशा द्वारा की गई।

कल फिक्की सभागार में वर्ष 2015 के साहित्य अकादेमी पुरस्कारों का वितरण किया जाएगा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रख्यात उर्दू विद्वान एवं साहित्य अकादमी के महत्तर सदस्य गोपीचंद नारंग होंगे।